त्रैमासिक परीक्षा 2018-2019

हिन्दी

कक्षा : XI

समय : 3 घंटे 15 मिनट **पूर्णांक : 100**

प्र.1. किसी एक विषय पर लगभग 400/450 शब्दों में एक संक्षिप्त प्रस्ताव अथवा एक कहानी लिखिए। **[20]**

(क) आजकल छात्रों में नकल की प्रवृति बढ़ती जा रही है, इसके कारणों एवं निदान पर अपने विचार लिखिए ।

(ख) ''बड़ों की दी हुई शिक्षा ही चरित्र-निर्माण में सहायक होती हैं'' - उदाहरण द्वारा इस कथन की पुष्टि कीजिए।

(ग) ''आत्मविश्वासी व्यक्ति के बढ़ते कदमों को कोई रोक नहीं सकता।''

(घ) तकनीकी विकास ने मनुष्य को सुविधाओं का दास बना दिया है। - उक्त कथन को स्पष्ट करें।

(ङ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय को आधार बनाकर एक मौलिक कहानी लिखें :-

(i) दुःख का कारण कायरता है ।

(ii) दुर्घटना से देर भली ।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर यथा संभव अपनी भाषा में लिखिए :-

कुछ ही वर्षों पुरानी बात है। दीन दयाल नामक एक सेठ अजमेर में रहते थे। एक दिन उन्होंने पुस्तक में पढ़ा कि गुरू के बिना ज्ञान

{Turn Over}

Downloaded From www.icsehoard.org

नहीं और ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं। सेठ ने निश्चय किया कि एक ऐसे गुरू की तलाश की जाए जो बहुत ज्ञानी हों। वे बहुत से गुरूओं के पास गए। उन्हें जाँचा परखा पर कोई खरा न निकला। परन्तु तलाश का अंत न दुआ।

काफी दिन बीत गए। सेठजी परेशान रहने लगे। एक दिन सेठानी ने कहा, "आप परेशान क्यों होते हैं। आप अपना काम करो। यह काम आप मुझपर छोड़ दो। जो मिला करें उसे मेरे पास भेज दिया करो। सेठजी सहमत हो गए। एक झंझट समाप्त हो गया। सेठानी जी ने पिजड़े में एक कौआ पाला। जो भी महात्मा वहाँ आते, - उनसे यही कहतीं - देखिए मेरा पाला कबूतर अच्छा है न"।।

अनेक संत आए। सभी कहते, "कबूतर कहाँ है कौआ है।" परन्तु सेठानी अपनी बात पर अड़ी रहती। जब वे टस से मस नहीं होतीं तो संत क्रोध से भरकर उल्टी-सीधी बातें कहते और चले जाते।

सेठानी ने हार नहीं मानी। यह क्रम चलता रहा। बहुतेरे संत आए और चले भी गए। कोई सेठानी की परीक्षा पर खरा नहीं उतरा। जो छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित हो जाए वह संत कैसा ? जो संत नहीं वह गुरु योग्य नहीं।

एक दिन एक वयोवृद्ध संत आए। सत्कार करने के उपरांत सेठानी वही कौआ और कबूतर का किस्सा शुरू कर दिया। ये संत आवेश में नहीं आए। कौए और कबूतर का अंतर समझाने लगे। सेठानी को न समझना था वे न समझी । उनके ना समझने पर संत इतना कहकर चले गए, "बेटी, हठ मत करना। तथ्य का पता लगाना, कोई सर्वज्ञ नहीं। हमसे भी और आपसे भी भूल हो सकती है। सत्य को समझने के लिए मन के द्वार खुले रखने चाहिए।" वे हँसते हुए

Downloaded From www.icsehard.org

चल दिए। न क्रोध था और न आवेश न मानापमान का भाव ही।

सेठानी संत को द्वार से वापस ले आई। नमन किया और उनके चरणों में बैठकर बोली, "जैसा चाहती थी वैसा ही आप में पाया। कृपया हमारे परिवार के गुरू का उत्तरदायित्व ग्रहण करें।" घर के सभी लोग उनके शिष्य बन गए। **[4x5=20]**

(क) सेठ कहाँ का रहने वाला था ? उसे गुरू की तलाश क्यों थी ?

(ख) सेठ की परेशानी का क्या कारण था ? उनकी परेशानी किस प्रकार कम हुई ?

(ग) सेठानी ने गुरू की तलाश के लिए क्या किया ?

(घ) अंत में सेठानी की परीक्षा में कौन सफल हुआ और क्यों ?

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक देते हुए उससे मिलने वाली सीख पर प्रकाश डालें।

प्र.3. निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाएँ :- **[1x5=5]**

(क) कान भरना ।

(ख) मुट्ठी गर्म करना ।

(ग) बाल-बाल बचना ।

(घ) दुम दबाकर भागना ।

(ङ) घोड़े बेचकर सोना ।

प्र.4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए :- **[1x5=5]**

(i) पुलिस को देखकर चोर आठ तीन ग्यारह हो गया ।

(ii) अपने बुरे दुष्कर्मों के कारण वह आज कंगाल है ।

{Turn Over}

Downloaded From www.iosboard.org

(iii) यह कार्य तत्काल इसी समय पूर्ण करना है ।

(iv) उसे मृत्युदण्ड की सजा मिली है ।

(v) लोकसभा का चुनाव गतवर्ष नहीं होगा।

हिन्दी साहित्य

किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रत्येक पुस्तक से एक-एक प्रश्न करना अनिवार्य है। [12½x4=50]

गद्य संकलन

(1) **"पुत्र-प्रेम" :-** 'पुत्र-प्रेम' कहानी का सार लिखकर उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। अथवा [12½]

"बिल्कुल बच्चों की सी बातें करती हो। इटली में ऐसी कोई संजीवनी नहीं रखी हुई है जो तुरन्त चमत्कार दिखाएगी। जब वहाँ भी केवल प्रारब्ध की ही परीक्षा करनी है, तो सावधानी से कर लेंगे।

(i) उपर्युक्त कथन का वक्ता कौन है ? उसका संक्षिप्त परिचय दें। [3½]

(ii) 'बिल्कुल बच्चों की-सी बातें करती हो' - कथन से वक्ता का क्या आशय है ? [3]

(iii) 'इटली में ऐसी कोई संजीवनी नहीं रखी हुई है' - वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए। [3]

(iv) "प्रारब्ध की परीक्षा" करने से वक्ता का क्या प्रयोजन है? [3]

(2) **'गौरी' :-** "किसी विलासी युवक की पत्नी बनने के बजाय मैं इन भोले-भाले बच्चों की माँ बनना पसंद करूँगी।' इस कथन के आधार पर गौरी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालें। [12½]

अथवा

Downloaded From www.icseboard.org

"एक जगह गरम-गरम जलेबियाँ बन रही थीं। बच्चों के लिए थोड़ी सी खरीद लीं। घर के दरवाजे पर पहुँचे। दरवाजा खुला था। घर के अंदर पैर रखने में हृदय घड़कता था। न जाने बच्चे किस हालत में हों।" [12½]

(i) किसने और कब जलेबियाँ खरीदीं ? जलेबियाँ खरीदने वाले का बच्चों से क्या संबंध था ? [1½]

(ii) सीताराम जी की अनुपस्थिति में बच्चों की देखभाल किसे करनी पड़ती थी ? इस बारे में सीताराम जी क्यों चिंतित थे ? [3]

(iii) जलेबियाँ खरीदने वाला व्यक्ति कहाँ और क्यों गया था ? [3]

(iv) इसबार बच्चों की देख रेख किसने और क्यों की ? सीताराम जी का उससे कब परिचय हुआ था ? [5]

(3) **"बाल लीला"** :- सूरदास जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताएँ कि उन्होंने बाल-कृष्ण की सुन्दरता का किस प्रकार वर्णन किया है ?[12½]

(4) **"साखी"** :- कबीरदास जी की भक्ति भावना के स्वरूप पर उनके दोहों के माध्यम से प्रकाश डालिए। [12½]

(5) **"एक फूल की चाह"**

"एक फूल की चाह" कविता का सार लिखते हुए बताइए कि कवि ने इस कविता में किस समस्या को उजागर किया है ? कवि इसके माध्यम से हमें क्या संदेश दे रहा है ? [12½]

अथवा

"भीतर जो डर रहा छिपाये, हाय! वही बाहर आया, एक दिवस सुखिया के तन को ताप-तप्त मैंने पाया। ज्वर में विह्वल हो बोली वह,

Downloaded From www.iosboard.org

क्या जानूँ किस डर-से-डर, मुझ को देवी के प्रसाद का एक फूल ही दो लाकर।"

(i) किसके हृदय में कौन सा डर बैठा था ? क्यों ? [1½]

(ii) 'एक फूल' की चाह किसने और क्यों की थी ? [3]

(iii) क्या पिता, बच्ची की इच्छा पूर्ति कर पाया यदि नहीं तो क्यों? [3]

(iv) हर इंसान का समाज में बराबर का अधिकार हैं ? इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? [5]

Downloaded From www.icseboard.org